शिक्षा बोर्ड आएं, नेहरू की द विजनरी को मिलकर समझें और युवा पीढ़ी के हित में सहयोग करें विपक्ष के नेता

धर्मशाला, (आपका फैसला)। हिमाचल विधानसभा के शीतकालीन सत्र के आगाज़ से ठीक पहले पंडित जवाहर लाल नेहरू की फिलॉसफी पर आधारित किताब द विजनरी प्रदेश की राजनीति के केंद्र में है। विपक्ष जहां इस किताब पर सवालों की बौछार कर रहा है, वहीं हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. राजेश शर्मा ने सीधे और सधे हुए शब्दों में विपक्ष को खुला न्योता देते हुए कहा कि नेहरू कांग्रेस के नहीं बल्कि देश के

प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. राजेश शर्मा का विपक्ष को खुला ऑफर

प्रथम प्रधानमंत्री थे और उनकी नीतियों के प्रचार-प्रसार में विपक्ष को भी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। डॉ. शर्मा ने विपक्ष से अपील की कि वह धर्मशाला स्थित शिक्षा बोर्ड कार्यालय पहुंचे और उनके साथ बैठकर इस किताब की वास्तविक सामग्री को समझने का प्रयास करे। उन्होंने कहा कि नेहरू केवल एक नाम नहीं, एक विचार और एक जीवंत दर्शन हैं, जिसकी नींव पर देश की आधुनिक सोच खड़ी है। डॉ. राजेश ने कहा कि नेहरू को पढ़ना, समझना और युवाओं तक पहुंचाना किसी एक पार्टी का नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र का कार्य है। अगर नेहरू की विचारधारा मिटाने की कोशिशें होती हैं, तो हमारा कर्तव्य है कि हम तथ्यों और उनकी सोच को पीढ़ियों तक पहुंचाएं। विपक्ष को इस किताब का विरोध नहीं, सहयोग करना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि द विजनरी जवाहरलाल नेहरू फाउंडेशन की अनुमति से और शिक्षा बोर्ड के कॉपीराइट के तहत प्रकाशित हुई है। किताब की कीमत 50 रुपए रखी गई है, जिससे बोर्ड की आय में भी वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि यदि विपक्ष चाहता है कि इसमें देश के शिक्षा मंत्री का संदेश शामिल हो, तो वह संदेश बोर्ड तक पहुंचाए, हम उसे खुशी-खुशी प्रकाशित करेंगे। डॉ. शर्मा ने किताब के सामाजिक संदर्भ पर भी जोर देते हुए कहा कि यह पुस्तक युवाओं को मोबाइल और नशे जैसी कुप्रवृत्तियों से दूर ले जाने में मदद कर सकती है। उन्होंने कहा कि अगर विपक्ष सच में चिट्टा के खिलाफ लड़ाई लड़ना चाहता है, तो इस किताब का विरोध नहीं बल्कि समर्थन करे। यह किताब युवाओं का ध्यान सकारात्मक दिशा में मोड़ सकती है और उन्हें फिर से पढ़ने की संस्कृति से जोड़ सकती है। उन्होंने विपक्ष के नेताओं से आग्रह किया कि वह धर्मशाला में मौजूद रहते हुए शिक्षा बोर्ड कार्यालय आएं, किताब का अध्ययन करें और समझें कि यह युवाओं के हित में किस तरह उपयोगी हो सकती है।

Scanned by Scanner Go

Dainik Jagaran

शिक्षा बोर्ड कार्यालय आ किताब समझने का प्रयास करे विपक्ष

- डा. राजेश ने कहा- किताब से बढ़ेगी बोर्ड की आमदनी
- 'द विजनरी' के प्रचार-प्रसार में सहयोग करे विपक्ष

जागरण संवाददाता, धर्मशाला : प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डा. राजेश शर्मा ने विपक्ष से अनुरोध किया है कि शीतकालीन सत्र से पहले बोर्ड कार्यालय में आएं व नेहरू पर जारी हुई किताब को समझने का प्रयास करे। उन्होंने कहा कि नेहरू अपने आप में एक विचारधारा हैं, उस विचारधारा को मिटाने के पिछले कुछ वर्षों से जो प्रयास हो रहे हैं, वह उसी बीच में से नेहरू की विचारधारा को जिंदा रखने की बात कर रहे हैं।

दूसरी बात, द विजनरी नामक किताब से विपक्ष को किस बात की दिक्कत है। अगर इस किताब को बोर्ड के माध्यम से युवा पीढ़ी तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा तो उससे बोर्ड की आमदन भी बढ़ेगी। किताब का मूल्य 50 रुपये निर्धारित किया गया है। विपक्ष को चाहिए कि किताब के प्रचार-प्रसार में मदद करे। इसके भीतर पूरी सामग्री जवाहरलाल नेहरू फाउंडेशन से बाकायदा अनुमति के साथ बोर्ड के कापीराइट के तहत प्रकाशित हुई है। जहां तक बात किताब के भीतर छपे संदेश की है तो उसमें बुरा ही क्या है। अगर विपक्ष को लगता है कि इसमें देश के शिक्षा मंत्री का भी संदेश होना चाहिए तो वह उस संदेश को हम तक पहुंचाने में मदद करे। उसे भी प्रकाशित करेंगे।

विपक्ष अगर प्रदेश से चिट्टा को मिटाना चाहता है तो इस किताब का विरोध नहीं बल्कि इसके समर्थन में आगे आकर इस किताब को थाम ले, ताकि युवा पीढ़ी का ध्यान दूसरी तरफ मोड़ सकें। बता दें कि शीतकालीन सत्र से पहले देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की फिलासफी को समझाती 'द विजनरी' नामक किताब ने प्रदेश की राजनीति में खलबल मचाई है।

Scanned by Scanner Go

Amar Ujala

'द विजनरी' को समझे विपक्ष : डॉ. राजेश

धर्मशाला। हिमाचल विधानसभा के शीतकालीन सत्र से ठीक पहले देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की फिलोंसॉफी को समझाती किताब 'द विजनरी' ने प्रदेश की सियासत में तूफान खड़ा कर रखा है। विपक्ष लगातार इस किताब पर सवाल उठा रहा है और बोर्ड पर स्कूली पाठ्यक्रम में कांग्रेस की नीतियों को थोपने का आरोप जड़ रहा है।

इसी बीच अब बोर्ड अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा ने एक वीडियो जारी कर कहा है कि नेहरू कांग्रेस के नहीं, बल्कि देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे। विपक्ष को भी उनकी नीतियों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। डॉ. राजेश शर्मा ने विपक्ष से अपील की है कि वह बुधवार से शीत सत्र शुरू होने से पहले शिक्षा बोर्ड के मुख्यालय में आएं और वहां बैठकर हमारे साथ नेहरू पर जारी हुई किताब को समझने का प्रयास करें।

डॉ. राजेश शर्मा ने कहा है कि पंडित जवाहर लाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे। इस नाते उनसे जुड़ी हर बात एक अलग मायने रखती है। रही बात कांग्रेसी विचारधारा की तो जब नेहरू का नाम आता है तो कांग्रेस का नाम अपने आप ही उसमें जुड़ जाएगा।

उन्होंने कहा कि विपक्ष को तो और ज्यादा जिम्मेदारी से काम लेते हुए नेहरू की नीतियों के प्रचार-प्रसार का काम करना चाहिए, क्योंकि नेहरू कांग्रेस के नहीं देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे। संवाद

Scanned by Scanner Go

Himachal Dastak

पुस्तक 'द विजनरी' में पंडित नेहरू की फिलॉसफी व उनके विचार किए गए हैं प्रस्तुत : डॉ. राजेश शर्मा

हिमाचल दस्तक ▪ धर्मशाला

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा ने विपक्ष के सवालों के जवाब देते हुए विपक्षी नेताओं को अपने कार्यालय में आमंत्रित किया है, जहां वे पंडित जवाहरलाल नेहरू की फिलॉसफी पर आधारित पुस्तक 'द विजनरी' को समझने का प्रयास कर सकते हैं। डॉ. राजेश शर्मा ने एक बयान में कहा कि विपक्षी नेता बुधवार से शुरू हो रहे विधानसभा के शीतकालीन सत्र से पहले कभी भी शिक्षा बोर्ड के धर्मशाला स्थित कार्यालय में आकर इस पुस्तक को समझ सकते हैं।

उन्होंने कहा कि उनकी कोशिश है कि विपक्ष को इस पुस्तक की सही जानकारी मिल सके। उन्होंने कहा कि पुस्तक द विजनरी में पंडित जवाहरलाल नेहरू की फिलॉसफी और उनके विचारों को प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक का उद्देश्य युवाओं और छात्रों को नेहरू के विचारों से अवगत कराना है। उन्होंने कहा कि उनकी कोशिश है कि इस पुस्तक के माध्यम से छात्रों और युवाओं को नेहरू के विचारों से अवगत कराया जा सके।

शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष ने विपक्ष के नेताओं के सवालों का दिया जवाब

युवाओं में पढ़ने की संस्कृति बढ़ाएगी किताब

चेयरमैन ने यह भी बताया कि 50 रुपये की यह किताब बोर्ड की आय बढ़ाएगी और युवाओं में पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देगी। उन्होंने कहा कि किताब को नेहरू फाउंडेशन की अनुमति से प्रकाशित किया गया है। डॉ. शर्मा ने विपक्ष से चिट्टा जैसी समस्याओं को खत्म करने के लिए इस पहल का समर्थन करने का आग्रह किया। उनका मानना है कि यह किताब युवाओं को मोबाइल और नशे से दूर कर किताबों और विचारों की ओर आकर्षित करेगी। उन्होंने जोर दिया कि इसका उद्देश्य विवाद पैदा करना नहीं, बल्कि युवाओं को सकारात्मक दिशा देना है।

Scanned by Scanner Go